स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स

RNI REG. NO: MPHIN/2007/20200

# जानकी अम्मल

चित्रः के. परशुराम

जानकी अम्मल का जन्म 4 नवंबर 1897 को केरल के तेल्लीचेरी कस्बे में एक सुसंस्कृत मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था। तेल्लीचेरी में स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने मद्रास से वनस्पति शास्त्र में ऑनर्स डिग्री हासिल की। बार्बोर स्कॉलर और फिर ओरिएंटल बार्बोर फेलो के रूप में दो बार अमरीका के मिशिगन विश्वविद्यालय से उन्होंने मास्टर व डी.एससी. डिग्री हासिल की। वहां से लौटने के बाद वे त्रिवेंद्रम के महाराजास कॉलेज ऑफ साइन्स में वनस्पति शास्त्र की प्रोफेसर हो गईं।

वर्ष 1934 से 1939 तक कोयंबटूर के सुगरकेन ब्रीडिंग इंस्टीट्यूट में अनुवांशिक विशेषज्ञ के रूप में कोशिका अनुवांशिकी और गन्ने व उससे सम्बंधित बांस की प्रजातियों व जीनस के संकर बीजों पर युंगातरकारी काम करने के बाद अम्मल ने 1940-45 तक लंदन के जॉन इन्स हॉर्टीकल्चरल इंस्टीट्यूट में असिस्टेंट साइटोलॉजिस्ट के रूप में कार्य किया। इसके बाद 1945-51 तक उन्होंने वाइसले स्थित रॉयल हॉर्टीकल्चरल सोसाइटी में साइटोलॉजिस्ट के दायित्व का निर्वाह किया। उन्होंने उस दौर में कोशिका विज्ञान को चुना था जब विज्ञान मुख्य रूप से केंद्रक और गुणसूत्रों पर ही केंद्रित था। 1945 में डार्लिंग्टन के साथ मिलकर उन्होंने '*क्रोमोसोम एटलस ऑफ कल्टीवेटेड प्लांट्स*' लिखी थी।

1951 में वे बॉटेनिकल सर्वे ऑफ इंडिया की स्पेशल ऑफिसर के रूप में भारत लौटीं। सर्वे का पुनर्गठन करने के अलावा इलाहाबाद में सेंट्रल बॉटेनिकल लैबोरेट्री के प्रमुख और जम्मू एवं कश्मीर स्थित रीजनल रिसर्च लैबोरेट्री में स्पेशल ड्यूटी अधिकारी जैसे दायित्व भी निभाए। कुछ समय के लिए उन्होंने भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र में भी कार्य किया। उसके बाद नवंबर 1970 में वे मद्रास चली आईं और मद्रास विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर एडवांस्ड स्टडीज़ इन बॉटनी में एमेटिरस साइंटिस्ट के रूप में सेवा देने लगीं। फरवरी 1984 में अंतिम श्वास लेने तक वे मद्रास के निकट मदुरावोयल स्थित सेंटर की फील्ड लैबोरेट्री में कार्य करती रहीं।

जानकी अम्मल को इंडियन एकेडमी ऑफ साइन्स और इंडियन नेशनल साइन्स एकेडमी का सदस्य चुना गया। 1956 में मिशिगन विश्वविद्यालय ने उन्हें मानद एल.एल.डी. प्रदान करते हुए प्रशस्ति पत्र में लिखा था, 'अम्मल की श्रमसाध्य व सटीक अवलोकन करने की क्षमता और असीम धैर्य, गंभीर व समर्पित वैज्ञानिक समुदाय के लिए अनुकरणीय उदाहरण है।'1957 में उन्हें पद्मश्री से नवाजा गया और वन एवं पर्यावरण मंत्रालय ने वर्ष 2000 में उनके नाम पर टैक्सोनॉमी के क्षेत्र में राष्ट्रीय अवार्ड की स्थापना की। सेवा निवृत्ति के बाद भी वे शोध कार्य में लगी रहीं, खासकर उन्होंने अपना ध्यान औषधीय पौधों व जनजातीय वनस्पति शास्त्र पर लगाया।

बीसवीं सदी की शुरुआत में एक महिला के लिए शोध में कैरीयर बनाना अच्छा खासा चुनौती भरा काम था।

प्रकाशक, मुद्रक सी.एन. सुब्रह्मण्यम की ओर से निदेशक एकलव्य फाउण्डेशन द्वारा एकलव्य, ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462016 (म.प्र.) से प्रकाशित तथा आदर्श प्राइवेट लिमिटेड, इंदिरा प्रेस कॉम्पलेक्स, एम.पी. नगर, ज़ोन-1 भोपाल (म.प्र.) 462 011 से मुद्रित। सम्पादकः डॉ. सुशील जोशी